IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्रसाद के नाटकों में राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना

डॉ० अर्चना कुमारी

सहायक प्राध्यापक (विभागाध्यक्ष–हिन्दी)

एच० पी० एस० महाविद्यालय, मधेपुर, (मधुबनी)

ल० ना० मि० विष्वविद्यालय, दरभंगा,

बिहार, भारत।

सारांश :

प्रसाद जी की नाट्यकृतियां पौराणिक युग से लेकर हर्षवर्धन युग तक के भारतीय इतिहास के स्वर्णिम एवं गौरवमयी कालखंड पर आधृत हैं तथा इन सभी कृतियों में भारतीय संस्कृति की शक्ति, समृद्धि एवं औदात्य का भास्वर चित्र प्रस्तुत किया गया है। यह रचना उस समय का है जब देश में गांधी जी के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन चलाया जा रहा था और प्रत्येक देशवासी के हृदय में स्वतंत्रता एवं राष्ट्रीयता की भावनाएं विद्यमान थी। प्रसाद जी ने अपने नाटकों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना जाग्रत की तथा भारत के अतीत गौरव का गान कर देश के नौजवानों को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

प्रस्तावना :

प्रसाद जी के नाटक अतीत के पट पर वर्तमान का चित्र प्रस्तुत करने वाले ऐसे नाटक हैं जिनमें कथानक भले ही इतिहास से लिया गया हो पर उनमें वर्तमान समस्याओं को ही प्रस्तुत किया गया है। राष्ट्रीयता की भावना, अतीत गौरव, आदर्श नारी पात्रों की परिकल्पना, सामाजिक समस्याओं की अभिव्यक्ति, उदात्त मानवीय मूल्यों की स्थापना प्रसाद के नाटकों की मूल विशेषताएं हैं।

प्रमुख शब्द : राष्ट्रीयता, आदर्श, अतीत गौरव, संघर्ष, स्वतंत्रता, ऐतिहासिक, आंदोलन, समस्या, प्रेरणा, चेतना, संस्कृति, देशभक्ति, उद्देश्य।

आलेख :

यह बात सर्व विदित है कि विश्व में राष्ट्रीयता का भाव सर्वप्रथम भारतीय साहित्य में ही दिखाई देता है, वैदिक साहित्य (अथर्ववेद) में घोषणा की गई है कि भूमि माता है और मैं पृथ्वी का पुत्र हूँ –

"माता भूमिः पुत्रोऽहम पृथिव्या।"

भूमि या पृथ्वी को माता मानने के मूल में वस्तुतः देश भक्ति या राष्ट्रीयता का ही भाव है, जिसका पल्लवन आधुनिक काल के साहित्य में व्यापक रूप से हुआ है और इसी क्रम में आए हैं भारतीयों में सांस्कृतिक पुनरूत्थान एवं राष्ट्रीय चेतना का स्वर फूँकने वाले साहित्यकार जयशंकर प्रसाद। हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध नाटककार जयशंकर प्रसाद के अधिकांश नाटकों की कथावस्तु तो ऐतिहासिक रही है, परंतु उनकी प्रेरणा रही है राष्ट्रीयता एवं देशभक्ति। प्रसाद जी की मान्यता रही है कि इतिहास का अनुशीलन किसी भी देश जाति को अपना आदर्श संगठित करने में बल प्रदान करता है। उन्होंने अपने नाटकों में इतिहास का प्रयोग अपने दौर के नवजागरण की प्रेरणा तथा उपयोगितावादी उद्देश्य से किया है। उनकी स्पष्ट धारणा थी कि किसी राष्ट्र को आगे बढ़ने के लिए अपने अतीत का गहरा संधान करना चाहिए, क्योंकि वहीं से भविष्य के उपयोगी संकेत मिलते हैं। उन्होंने इतिहास के उन प्रसंगों को चुन–चुन कर उठाया जो स्वाधीनता आंदोलन के समय देश को प्रेरणा देने में सबल हो सकते थे। उन्होंने अपने नाटक 'विशारव' की भूमिका में स्वीकार किया है – ''मेरी इच्छा भारतीय इतिहास के अप्रकाशित अंश में से उन प्रकांड घटनाओं का दिग्दर्शन कराने की है जिन्होंने हमारी वर्तमान स्थिति को बनाने का बहुत कुछ प्रयत्न किया है।'' इतिहास के परिपेक्ष्य में वर्तमान की समस्याओं को वाणी देने का प्रयास 'विशारव' नाटकों से ही प्रारंभ हुआ है।

अपने युग में होने वाले धार्मिक एवं सांप्रदायिक संघर्षों को प्रस्तुत करने के लिए उन्होंने अपने अनेक नाटकों में ब्राह्मण–बौद्ध संघर्ष को स्थान दिया है। 'जनमेजय का नागयज्ञ' नाटक में आर्यों और नागजाति के संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है। प्रसाद जी ने क्षेत्रीय विभेदों को समाप्त कर राष्ट्रीयता का भाव विकसित करने पर विशेष बल देते हुए 'स्कंदगुप्त' एवं 'चंद्रगुप्त' नामक नाटक लिखे। भारत को एक राष्ट्र के रूप में संगठित कर उसे शक्तिशाली बनाने के उद्देश्य से भी उन्होंने नाटकों की रचना की। स्वाधीनता संग्राम की परिस्थिति भी उन्हें उद्देश्य प्रधान व ऐतिहासिक नाटकों की ओर प्रेरित करती थी। राष्ट्रीयता की अनिवार्य शर्त है राष्ट्र के प्रति गौरव भावना। जब तक राष्ट्र के प्रति गौरव का भाव नहीं होगा, राष्ट्रीयता की भावना नहीं आ सकती। १६२८ ईस्वी में प्रसाद जी द्वारा रचित प्रसिद्ध नाटक 'स्कन्दगुप्त' में यही गौरव भाव कई स्थानों पर दिखाई देता है। यह वही समय है जब कांग्रेस के भीतर 'पूर्णस्वाधीनता' होने लगी थी। यह दौर भारत को स्वाधीन कराने की राष्ट्रीय चेतना का दौर था। स्कन्दगुप्त बाह्य विधान में ऐतिहासिक नाटक है किंतु इसका उद्देश्य तत्कालीन राष्ट्रीय संघर्ष को ही व्यक्त करना है।

किसी का हमने छीना नहीं, प्रकृति का रहा पालना यही।

हमारी जन्मभूमि थी यही, कहीं से हम आए थे नहीं।।

यह राष्ट्रीयता 'अंधराष्ट्रवाद' नहीं है। मानवता के आधार पर इसकी स्थापना हुई है। देवसेना और भीमवर्मा अपने राज्य को देश पर न्योछावर करना चाहते हैं। समस्त देश के कल्याण के लिए वे स्वार्थों की बलि देने के लिए तैयार हैं। देश के लिए देवसेना अपने प्रेम का त्याग करती है। जब उसे लगता है कि स्कंदगुप्त प्रेम में अकर्मण्य होने लगा है तो वह प्रेम के त्याग में भी संकोच नहीं करती। त्याग का यही भाव नाटक के इस गीत में भी दिखाई पड़ता है।

जिए तो सदा उसी के लिए, यही अभिमान रहे यह हर्ष।

निछावर कर दे हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष।।

सन १६३१ में प्रकाशित प्रसिद्ध नाटक 'चंद्रगुप्त' में भी भारतीय इतिहास के मौर्य काल की कथा आई है और उस काल की राजनीतिक स्थिति को प्रकाश में लाते हुए प्रसाद जी ने आधुनिक काल के लोगों को भी राष्ट्र के लिए सेवा, त्याग एवं बलिदान पूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा दी है। वस्तुतः इतिहास के खंडहर से जीवंत पात्रों को सामने लाते हुए उनके माध्यम से देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ाना ही 'चंद्रगुप्त' नाटक का मूल उद्देश्य है। प्रसाद जी के इस नाटक में 'चाणक्य' में गांधी जी का प्रतिबिंब देखा जा सकता है जबकि 'चंद्रगुप्त' और 'सिंहरण' में क्रमशः नेहरू और सुभाष का प्रतिरूप दिखाई पड़ता है। तत्कालीन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए सिंहरण जैसे वीर का उदात्त चरित्र न जाने कितने नौजवानों के लिए प्रेरक बना होगा। 'आम्भिक' उन देशद्रोहियों का प्रतीक है जो अंग्रेजों का साथ देते थे और उनका समर्थन करते थे। सिकन्दर एवं सिल्यूकस को उन अंग्रेज शासकों का प्रतीक माना जा सकता है जिनका एकमात्र लक्ष्य था जनता का शोषण एवं अत्याचार करना। अलका के रूप में हमें एक ऐसी भारतीय नारी के दर्शन होते हैं जो राष्ट्र के सम्मान और गौरव बनाए रखने के लिए त्याग और बलिदान का अद्वितीय उदाहरण पेश करती है। वस्तुतः वह प्रतीक है भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाली हजारों नरियों का। साथ ही इस नाटक में प्रसाद जी ने ऐसे गीत भी लिखे हैं जो भारत के अतीत गौरव के साथ–साथ देशभक्ति की भावना भरी हुई है। इस नाटक का प्रसिद्ध गीत अलका ही गाती है और जनता को देश की रक्षा के लिए सन्नद्ध करती है।

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती।

स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती।।

अमर्त्य वीर पुत्र हो दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो।

प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो बढ़े चलो।।

भारतवासियों की यह विशेषता रही है कि उन्होंने अनजान विदेशियों को भी अपना बंधु समझ कर गले लगाया। जिसे सबने ठुकरा दिया उसे हमने गले लगाया। 'चंद्रगुप्त' नाटक में प्रसाद जी विदेशी नारी कॉर्नेलिया को जो शरीर से तो यूनानी है, परंतु ह्रदय से भारतीय तथा यूनानी और भारतीय संस्कृतियों का मेल करने वाली आदर्श नारी के रूप में चित्रित किया है एवं उनसे भारतीय गौरव का गुणगान भी कराया है –

अरुण यह मधुमय देश हमारा।

जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।।

सरस तामरस गर्भ विभा पर, नाच रही तरुशिखा।

मनोहर, छिटका जीवन हरियाली पर मंगल कुमकुम सारा।।

अपनी अंतिम रचना 'ध्रुवस्वामिनी' में प्रसाद जी ने राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना का उत्कृष्ट स्वरूप प्रस्तुत किया है। चंद्रगुप्त और ध्रुवस्वामिनी के रूप में प्रसाद जी ने दो ऐसे पात्र प्रस्तुत किए हैं जिनमें भारतीय संस्कृति मूर्तिमान हो उठी है। ध्रुवस्वामिनी के रूप में उन्होंने सशक्त नारी पात्र की अवतारणा की है। वह आधुनिक नारी का प्रतीक है, जो पुरुषों की दासी एवं भोग्या न रहकर अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत है। उन्होंने यह भी संदेश दिया है कि नारी को अन्याय एवं अत्याचार का विरोध करना चाहिए तथा अपना आत्मबल जगाकर अपनी रक्षा स्वयं करने की चेष्टा करनी चाहिए। युगों–युगों की दासता को त्याग कर एक नई चेतना उसे विकसित करनी चाहिए। चंद्रगुप्त राष्ट्र का सजग प्रहरी

है। वह कुल मर्यादा की रक्षा के लिए अपने प्राणों की परवाह नहीं करते हैं। उसके पराक्रम का पुरस्कार ही उसे राष्ट्र का कर्णधार बनाकर प्रदान किया जाता है। मंदाकिनी एक काल्पनिक पात्र है जिसे चंद्रगुप्त की बहिन के रूप में कल्पित किया गया है। उनका मत है कि राष्ट्र और राष्ट्र के सम्मान की रक्षा के लिए प्रत्येक राष्ट्रवादी को प्राणपण से जूझना चाहिए। वह जानती है की ''वीरता जब भागती है तब उसके पैरों से राजनीतिक छल–छन्द की धुल उड़ती है।''

'ध्रुवस्वामिनी' में प्रसाद जी ने नैतिक मूल्यों पर अधिक बल दिया है, जो भारतीय संस्कृति का अविभाज्य अंग है। प्रसाद जी की धारणा है की नीति पथ पर चलने वाले पात्र अंततः अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेते हैं। इस नाटक में प्रसाद जी ने सांस्कृतिक मूल्यों के साथ–साथ राष्ट्रीयता को भी अभिव्यक्ति दी है। यह नाटक परतन्त्र भारत के नवयुवकों एवं नवयुवतियों के लिए निश्चय ही प्रेरणादायक रहा होगा।

निष्कर्ष :

इस प्रकार स्पष्ट है कि अपने नाटकों में विभिन्न राष्ट्र प्रेमी एवं देशभक्त पात्रों की योजना करके प्रसाद जी ने यदि एक ओर अपनी व्यापक राष्ट्रीयता का परिचय दिया है, तो दूसरी ओर आधुनिक भारत के लोगों को भी राष्ट्रप्रेम एवं देशभक्ति के लिए प्रेरित किया है। नाटक में एक ओर भारत के स्वर्णिम अतीत की झांकी है, तो दूसरी ओर वर्तमान राष्ट्रीय समस्याओं की ओर इशारा और समस्याओं का समाधान भी है। आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी उनके नाटकों के संबंध में कहते हैं – ''प्रसाद के नाटकों का शरीर जहां पूर्ण साहित्यिक है, वहां उनका मन अनिवार्यतः ऐतिहासिक है और उनकी आत्मा शुद्ध सांस्कृतिक।''

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. चंद्रगुप्त नाटक, जयशंकर प्रसाद, जनभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. स्कन्दगुप्त नाटक, जयशंकर प्रसाद, जनभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. ध्रुवस्वामिनी नाटक, जयशंकर प्रसाद, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. दृष्टि (The vision), प्रथमतल, मुखर्जी नगर, दिल्ली।
5. प्रतियोगिता साहित्य सीरीज, तृतीय पत्र, डॉ० अशोक तिवारी, साहित्य भवन, आगरा।
6. प्रतियोगिता साहित्य सीरीज, द्वितीय पत्र, डॉ० अशोक तिवारी, साहित्य भवन, आगरा।